राजवंश को इसे भलीभाँति हृदयंगम कर लेना चाहिए, जिससे वह प्रजा का पालन और कामरूपी बन्धन से संरक्षण कर सके। मानव जीवन का उद्देश्य भगवान् से अपने शाश्वत् सम्बन्ध के ज्ञान का अर्जन करना है। अतएव सब राज्यों और लोकों के अधिनायकों का यह प्रधान कर्तव्य है कि विद्या, संस्कृति और भक्ति के द्वारा जनता में इस शिक्षा का प्रसार करें। दूसरे शब्दों में, सभी राज्याध्यक्षों से यह आशा की जाती है कि वे कृष्णभावना का प्रसार करें, जिससे कि इस विज्ञान से लाभान्वित होकर जनता मानवयोनि के दुर्लभ सुअवसर का सदुपयोग करती हुई सर्वोन्मुखी विजयपथ का अनुसरण कर सके।

इस युग में सूर्य के अधिष्ठातृ-देवता विवस्वान् हैं। ये सम्पूर्ण सौरमण्डलीय लोकों के जन्मदाता और सूर्यलोक के अधिपति हैं। ब्रह्मसंहिता में उल्लेख है—

यच्चक्षुरेष सविता सकलग्रहाणां राजा समस्तसुरमूर्तिरशेषतेजः।
यस्याज्ञया भ्रमति सम्भ्रतकालचक्रो गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

ब्रह्माजी ने कहा, 'मैं भगवान् गोविन्द का भजन करता हूँ, जो आदिपुरुष हैं और जिनकी आज्ञानुसार सम्पूर्ण लोकों का अधिपति सूर्य अशेष तेज एवं शक्ति धारण कर रहा है। यह सूर्य भगवान् गोविन्द के चक्षु के तुल्य है और उन्हीं की आज्ञानुसार अपने काल-चक्र में घूमता है।'

सूर्य सम्पूर्ण लोकों का अधिपति है और सूर्यदेव (वर्तमान समय में विवस्वान्) तेज-शक्ति की आपूर्ति करके अन्य सब लोकों का नियन्त्रण करने वाले इस सूर्य पर राज्य करते हैं। यह भगवान् श्रीकृष्ण की आज्ञानुसार भ्रमण कर रहा है। आदिकाल में भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता-विज्ञान ग्रहण करने के लिए विवस्वान् को ही अपना प्रथम शिष्य बनाया था। अतः गीता क्षुद्र लौकिक विद्वान् के लिये प्रयोजित मनोधर्मी की रचना न होकर स्मरणातीत काल से चली आ रही परम्परा के द्वारा प्राप्त प्रामाणिक ज्ञान-शास्त्र है। महाभारत (शान्तिपर्व ३४८.५१-५२) में गीता-इतिहास के सम्बन्ध में यह उल्लेख है—

त्रेतायुगादौ च ततो विवस्वान्मनवे ददौ।
मनुश्च लोकभृत्यर्थं सुतायेक्ष्वाकवे ददौ।
इक्ष्वाकुणा च कथितो व्याप्य लोकानवस्थितः।।

''त्रेतायुग के आदि में विवस्वान् ने इस योग (भगवान् से सम्बन्ध) विषयक विज्ञान का मनु को उपदेश किया था और मनु ने, जो मानवमात्र के जन्मदाता हैं, इसे पुत्र महाराज इक्ष्वाकु को दिया। इक्ष्वाकु इस पृथ्वी के शासक एवं उस रघुवंश के पूर्वज थे, जिसमें भगवान् श्रीराम ने अवतार ग्रहण किया। इससे प्रमाणित होता है कि भगवद्गीता मानव समाज में महाराज इक्ष्वाकु के समय से ही विद्यमान है।'

वर्तमान कलियुग के केवल ५००० वर्ष व्यतीत हुए हैं, जबकि इसकि पूर्णायु ४,३२,००० वर्ष है। इससे पूर्व द्वापर युग (८,००,००० वर्ष) और उससे भी पूर्व त्रेतायुग (१२,००,००० वर्ष) व्यतीत हो चुके हैं। इस प्रकार लगभग